

दीपवत्कृतानाविधमन्त्रयपाठस्तानमूसनाद्वयलक्ष्यसम्मोडनीकदानदायकभनखनियकलनीशकेना
 खद्युतिलगुलस्यगतललवभादुकदिहुमत्रिचक्रान्याकमप्येद्विदासुधीषियलीमरुमावमसहनविदनका
 दिवन्धलाचितासामयाजिलायदुजिलायुगकादिगृहवसस्यचितासामयीलाकहनकोनकेविधनसन्नायस्तानय
 तमिदं गृहविष्कंदेतामिह्यादिदक्षिणस्यधर्मे॥॥नन्दिपूजादीयवृत्तशीलवाक्त्रधर्मयदानकसायकनसष्ट
 दान॥यश्चवर्गशुद्धदशात्सर्वोपकनसन्निर्वात्रिपारायनियसफारासयतापर्वयोतकाता॥शुद्धमूलवर्धनिय
 स्फारायवृत्तशीलारायज्जादिधर्मश्रद्धापूर्वपातकनाहित्यकासानानाविधध्यानदासदाशीममरुवीमामरुवीश
 ती० पादकाकास्यरुडनतीमुकलशतामुयाटिपिल्लीपिल्लदीपवत्कृतानाविधमन्त्रयपाठस्तानमूसनाद्वय
 लक्ष्यसम्मोडनीकदानदायकभनखनियकलनीशकेनाखद्युतिलगुलस्यगतललवभादुकदिहुमत्रिचक्रः

२३७ दानोचोदितुम्

सर्वपदत्रिदा ७३६० चिप्यली मूकमाधमसूत्रविदलकादिननुला चित्तसामग्रीजिलायदृजिलायुगकादिगद
 युत्तिसामग्रीलादकनकानकविधवसूतमिदं गुरुदं गुरुं विष्णुदेवतमित्यादिदक्षिणागुरुयवधानं ॥ वि
 म्मोदिनीयसायकनशगुरुदान ॥ धनमन्यायुतं ह्रीं तं सर्वोयकन (ह्रीं तं) योसनयुतं नम्री (गम) जीवध्वर
 केभा ॥ गुरुदवादिदं दारा तावतसर्वगमयाज्जुतं ॥ यावत कल्यावसानं ननु कल्यादिप्राथिवीरुवतस्कीतिवदत्यजा २२
 विधाय अथ यावत कल्यावसानं गेजु किरागित्तकल्योदियाथिवित्तरुवत कामानानाविधमन्याजावध्वदोपी
 दास (गम) सहिषीयासनयादका कोस्यराजनतामुद्यीयिलनीयिलनेदीयवदनानाविधमत्तयपाणस्कानम
 सलाद्वन ७४ योसमोडीकदोलदारक अनखलिगकलनीशकनारवदुतिलगुरुय ततिललवधादेकदिस्म
 त्रिचमन्याकसर्वपदत्रिदा ७३६० चिप्यली मूकमाधमसूत्रविदलकादिननुला चित्तसामग्रीजिलायदृजिलायुगकादिगदवसत्युत्तः

हन्तवावसनीसाकमन्त ॥ यजादिविधाय अथ वसूलाकयाकिकामगुरुदं विष्णुदेवतमित्यादिदक्षिणागुरु
 ल्यवधानं ॥ यथाकागुरुदान ॥ गुरुदानगननका ॥ यजादिविधाय अथ नगत्रयो किकामगुरुदं गुरुदं विष्णु
 देवतमित्यादिदक्षिणागुरुयवधानं ॥ स्कन्दयुनादीरगुरुदान ॥ नथमध्वगडीदासीकं यो गुरुमधायिवाह
 मदार ७५ यधुतासनाजालुविजयत ॥ यजादिविधाय अथ यथिविधायिकनधकनाडलेवनकामगुरुदं गुरुदं विष्णु
 मित्यादिदक्षिणागुरुयवधानं ॥ अथ (गम) दानी ॥ ततवदस्यसूकसायकनधसवत्सकयिलगवीदान ॥ रु
 दीप्रयोखनी वसूकीस्योस्ययुती ॥ सवसीकयिलीदत्ता कलीसफकमध्वन ॥ सायकेनधसवत्सकयिल
 जादिविधाय अथ सफकलसेमध्वनशकामगुमीसम ७६ दीनयवनीवेसूकीस्योस्ययुती सवसीक
 उदेवतामसूक (गम) यथोदि ॥ दक्षिणागुरुयवधानं ॥ यथाखकामधुति ॥ यथाकासाय

[illegible][illegible]

॥ गवन्द्यात् कविलाम्बायिस्वती समभवत् प्रायाद्वक्त्रवक्त्रविदो वनः ॥ दक्का कवप्रनित्यं कवि
 दत्तहिमः ॥ दीप्योयु उर्याचैव रुगवी च रावितः ॥ चव्यवलम मन्त्रावलमन्यसेम द्विमाना आदया
 वृद्धः ॥ कविलीनागुसंहायः ॥ रावः ॥ नेनामकृपानि कविलीकरुवनिष्ठः ॥ तावत्काठमरुमाधिव्यो
 दिविमादत्तः ॥ चतवम् प्रविच्छन्नामि तिपदद्वयदृष्टं नागः ॥ यथसमनियतवम् ॥ क्वाद्ययैमे ॥ चतवम्
 कानं कलेवी ॥ व्यक्ष्मस्वतवः ॥ चक्ष्मदिकालादले ॥ यथैमं दत्ता किं किलीसाला यदयति सागवः ॥
 ॥ मुखे सन्दायी ॥ साधिकनल कविलगवीकृजादिविभयः ॥ अद्य ॥ गोमरुमुत्तयदुलसमरुलनित्यद
 कनिवासदीप्योयु रुगवल्भीवतवैच्यवलमन्त्रावलमन्यसेम द्विमाना रावदत्ता कविलग
 ॥ मेकृपसमसंख्या काठवर्षसंख्यावकि नस्वग्नेलाकसादन कामः ॥ मीचैलेच्छिनीस्वर्लकनीसूच

[illegible]

॥ दत्तसर्वेऽनुकूलं कथं यथासीदस्य नैका नरुणुकया त्वा नायित्वं जखीत्त रुवनकामं मूर्मां स्वरु
 सुनां मुंका लो गूलरु विनां च धामा लो कलं गन्धयु व्यालं कृता कृतपनि यव न धां दलमस्वधू
 नीं गा नृद देवतां ममूक गम गाय त्यादि दक्षिण (गमयु कृ गुरु धर्म) ॥ नृद कथा यवा साधिका नीरुः
 गच्छा न्नपान न तु यत्र यत्र यत्र न म मूमा ॥ ॥ ममूक न गीय नाहि वी दा न ॥ नाहि वी दु ल्यव त्मा कुरु (धनं दत्ता
 यस्तिनी ॥ सुवर्गा वसु संवीगां सुयला क मे ली यत ॥ नाहि वी नाहि न स्या सुगी लां सोय क न व नाहि वी पूजादिः २८
 विषय नृद सुयला क म हि न त्व कामं मूर्मां नाहि वी दु ल्यव त्मां धनं दत्ता यस्तिनी सुवर्गा सुववसु संवीगां नृद
 देवता मि त्या दि दक्षिण युकु गुरु धर्म ॥ ॥ समान वत्स ल्य न धनं दत्ता न ॥ समान वत्सां धनं दत्ता नृं (धनं दत्ता य
 यस्तिनी ॥ सुवर्गा वसु समीता मि त्वा ला क म ली यत ॥ सामान वत्सां समान वत्सां धनं दत्ता ग वी पूजा दि विषय

नृद सुयला क म हि न त्व कामं मूर्मां समान वत्सां धनं दत्ता यस्तिनी सुवर्गा गां दये वता मि त्या दि दक्षि
 ण (गमयु कृ गुरु धर्म) ॥ ॥ समान वत्स ल्य न धनं दत्ता न ॥ समान वत्सां सुवर्गा धनं दत्ता यस्तिनी ॥ सुवर्गा
 वसु संवीगां सामला क म ली यत ॥ नावा ला क र्च न ॥ सवत्स ग वी पूजा दि विषय नृद साम ला क म हि न त्व
 कामं मूर्मां नाव त्सां धनं दत्ता यस्तिनी ॥ सुवर्गा वसु संवीगां नृद देवता ममूक गम गाय त्यादि दक्षिण (ग
 कुरु धर्म) ॥ ॥ समान वसु कुरु धनं दत्ता न ॥ समान वत्सां कुरु धनं दत्ता यस्तिनी सुवर्गा वसु
 नां मनि ला क म ली यत ॥ कुरु ग वी पूजा दि विषय ॥ नृद मि ला क म हि न त्व कामं मूर्मां सव त्सां क
 र्च न धनं दत्ता यस्तिनी ॥ सुवर्गा वसु समीगां गां नृद देवता ममूक गम गाय त्यादि दक्षिण (गमयु कृ गुरु ध
 ॥ धनं दत्ता यस्तिनी ॥ सवत्स ग वी दा न ॥ वात मय सवत्स नृ सुवत्सां काम दाहि नी (यदा यव मु ममी

यत्नाकमहीयत ॥ वातजं च सवर्णं धूमन (धनू गवीयूजादिविधाय ॥ अथ वायुसकमक्ष
 मं ॥ मां वातवैश्वानरवर्णं सवर्णं कामदाहिनी ॥ वसुसम्पत्तीनां नृदेवताममेक ॥ गण
 दिदक्षिणा ॥ गायक्यगुरुभाक्तं ॥ ॥ समानवर्णं वसुधुमुधनू गवीयानां ॥ समानवर्णं धूम
 धनं दत्ताय यस्मिनी ॥ सुवर्णं वसुसंवीतां यमलाकमहीयत ॥ धूमं कुरु साहि नवर्णं ॥ ध
 धनूयूजादिविधाय ॥ अथ यमलाकमहीयत कामं ॥ मां समानवर्णं (धनू ययस्मिनीं सुवर्णं व
 सुसंवीतां नृदेवताममेक ॥ गणायत्यादिदक्षिणा ॥ गायक्यगुरुभाक्तं ॥ ॥ हि नवर्णं सवर्णं
 विमलाकमहीयत ॥ हि नवर्णं विमलाकं सवर्णं कामदाहिनी ॥ यदायवसुसंवीतां को वनलाकम
 धूमं ॥ हि नवर्णं गवीयूजादिविधाय अथ को वनलाकमगायक्यकामं ॥ मां हि नवर्णं सवर्णं

३०

गायक्यकां ऊयुक्तं दग्धनायानि विदुर्या नदशाक्य (वसुधुसधार्षववरुक्तं धावीनादकां ऊय
 रुगामिति यानदिन नवयुर्वकासदग्धवायाम्भुनयानगीनामित्यर्थः ॥ गायक्यदिविधाय अथ
 गायक्यगायक्यकामं ॥ मां सवर्णं धूमं वसुधुकादिनां ललाटनददर्थं धावत्युगं दसमूर्द्धां नऊनकन
 वनर्णं मुक्तां विनां लाङ्गलां कांशायदाहो ॥ धनं नृदेवतामित्यादिदक्षिणा ॥ गायक्यगुरुभाक्तं ॥
 ॥ यवीयूजादीयनिवर्णं यस्मिन् यदा न कुरुमगवीयानां ॥ सु रं ममर्थां गवका नयदाङ्गानां नृवनां
 वसुधुवावर्णं कुरुता यानूया लाकमूर्ध्मां वसुधुवावर्णं कुरुति गुधरुतबीत्यविमुधुवावर्णं सारुलमूर्ध्मां
 लाकयार्थः ॥ विविगविगं ॥ पूष्यं च रं धयुष्यनिवदते ॥ नथ क्रमायदाहदीनां गीसमर्थं यत् ॥ क्रमायन
 मुदवित्त्वदियादादभारु नरुक्कृदीयत ॥ पुनर्मां हि ऊनाजायदाययकि वराविन ॥ अथ पूष्य

प्रमत्त प्रायश्चित्त विधुदय। मन्त्राणां मुमन्त्रं संयतन पूना किल॥ सफ पूर्वो व नानर्वं न नोद कि लि च
 कितान्। उद्धृत्य प्रायश्चित्त द्रवी ला क मन्त्र म॥ उद्धृत्य द्रुम मय दितो देवी दुर्गा निव र्ण विन निव र्णः
 येन रु मगवी पूजा दिवि धाय नृ आरु मसा क प्रादि काम ॐ सां रु मगवी विमुक्त का दयितां ॐ मिसे क ल्या रु
 मगवी विमुक्त का दयितां गतां गन्ध पूय दीय विविग व दू पृथे दुर्गा देवी सं पूज्य का ययि त्वा तां गन्तु सम
 र्थ यत्। देवी त्वदीया दा दं भु व रु क ष दी यत् ॥ ॐ त्रिय ठित्वा नृ आरु यरु ल पाय दू यं प्रादि नोद कि लि
 य सं हि त सफ क ल पूर्व सफा व न मर्वे शा रु न ल पूर्व क त ग क म का नू रु म देवी ला क म य त क म ॐ सां ना ज
 न नृ गृध्र न भू रु मगवी विमुक्त व ता मि त्या दि द कि षा पृच्छ ग रु धा नं ॥ ॥ नृ ध दू व रु द नं ॥ गन्ध र म य पू ना ष य
 ल क द व दान स्य रु लं ग म रु म म त। प वि ग म्मा व र्ण वे व सर्व दाना रु म न था दि ग ध नू स मा त ग्ना त क र षे व ध

३८

दान चान्दिका

मय च रु द्र ना दी पूष्य मय द का ग न्ध म य ता मां गु ड म य डि का को म म य पू र्ण च अ रु व ल रु
 गी वी नी य म रु र्ण को म्मा प द। ही तिल म र्ण। धनं वि कृ द व ता म म क ग म्मा य द। दि ध नूः
 न पूर्व व त ॥ ॥ देवी य ना पी य तिल ध नू दान ॥ य जा द पूर्व व त ॥ ग म्मा य लि फ रु
 क रु ध। ये नि य त वि का ष पी रु ग द धी म रु द नू वि न च र्ण त ग रु वी नी दि वी दृ म की ने रु द
 ग य धा वि हे त म्मा ला रि रु म ना द न व र्ण ॥ ॥ पू ज्य ॐ सां म म्मा य का ना य ग रु द्वा स न द
 त। प्री य मां ने दि नी दे वी म म्मा ला च र्च का उ म ॥ ॥ ति या ले त्वा न दि नी म ना व मा ध नू म म्मा
 म्मा य सर्व पा य वि म्मा कि सर्व का मा वा दि की न व रु ते रु न दी क स र्चि र्च रु र्च रु द क पा यः
 म क म्मा हि त ल्हा की न व रु व रु न दी क स र्चि र्च रु र्च रु द क पा य स क र्च म स्त्रा मि ह य न म रु र्णः

॥ पूर्वदशमधनसकलसहितात्मसमूहपूर्वक एतल्लोकिककष्टधिविपत्तित्वकाममृग
 मीमेयः एकैकमयविमोक्षपथमालाविरुचितीकालिष्यजनाहोवक्रवक्राहोदितादिनपथ
 अलिविंदसमीकिर्कांरुद्रलुमयचतुष्टयदो नूच्यचतुष्टयनौहमनगौहकागुनमयष्टदो
 ॥ ५ ॥ मययाध्यक्षया प्रजामस्य गलकम्बली श्रुगुनकथ्यूनमय द्वापमफलमयचतुस्तनी गुडकी
 ॥ ६ ॥ धिर्वर्कामयजिह्वा क्रोममयपृच्छी शिरसं पद्मा मको विचित्रतामसं यदृच्छी गच्छमर्थ्यम
 ॥ ७ ॥ यविकल्पितवत्सहिति धनीविक्रदेवतामसूकगणधारयत्यादि धनस्य धर्मैर्पूर्ववत् ॥
 धनमूलं लोकावदवीरकृष्णमुनिस्तथावगमयदातव्या ॥ ॥ ताम्रधनं कान्तं ॥ ५ ॥ यावत्
 तिकै विधाय यवदिने गुचिना चान्ते ष्यया विहृदती दती दवाती तयसा निनीवद

मायूकां विनिष्कृ गन्धमयनासां रधनं च तमयां विष्कृ देवनामित्यादि दक्षिणाधनस्य गर्तं ॥ उर्वेजलक्ष्मीन
मधूदधीकृ न सन्वती गले रधनं तं सकनामपि दोनक्षियमवहिकर्तुं वा ॥ रावसंख्या कामता वा जग
कृत्वा ॥ यूजा वा कृत्वा यद्यदसु न जलादियदयुक्तं यथा सर्वा सौख्यवद्वर्णाधनं नाम दकपादत्वं ॥ पूर्वोक्ति
मुख्यानि वृत्तिः ॥ कृष्णजितनिवृत्तौ यदलिककृत्तुं नाधवाकांक्षकं ॥ स्वनूय रधनोत्वाकांक्षया नृः
राकायव कृष्णजितवाधं रूपाकृष्णजितकृष्णयत्नमात्रा न्यासां वाधं तु ल्ययन ॥ ॥ स्वनूय रधनं दानं
॥ यात क्षीनित्यादि मंगुया ० श्रीरुयसितसूक्ष्मं नकां स्यदाह नयणारुनधना नारु लक्ष्मि निवृत्तता स्य
पदीनां गुण रधना वयव रन्धना या ० अदाता ॥ स्वनूय रधनो गद नूय याग रूपा निवृत्तिः ॥ ॥ गुरु स्वनूय रध
प्रतिविधिः ॥ वक्ष्ये माधवाकांक्षानुसा प्रदवाकांक्षाय यत्ति फलं स्यात् ॥ श्री कृष्णाय निष्ठा यिना गुनूयः

[illegible][illegible]

॥ रुद्रस्य कामेर्मासर्वे न सत्यं नानामुक्तं ॥ ॐ निविजया भनक्तु नं श्रुतकारि कमासीयामूक निथो सर्व
 दिक सर्वकामावापि सुगतिरुगित्व काम ॥ सामक कृ यनि माधी बहुर्थ रागय नि क स्थित वत्स स हिता मि
 कृ द धु म न व रु धा दा यु व म य द न ग न्य म य ता सां गु उ म य डि क्कं य ध र न ध रू षि त य कं सु व र्ध न्ना मां
 नो य स्व नां को स्था य दा हां व रु व मु वि रु षि मां सु गि नां यं व न त्स म म नि मां स र्वो वि धि यू तां व स म यीं ध न्
 वि षू द्धे व न म नू क र म ग्रा य त्या दि द क्रि षा ध न स्य र्मा नै ॥ ॥ य ध नू दानां ॥ ध नू ध न नू मा द ला यो र्ध
 मा स्यां न ना धि या सा धि स क्ता न य दू र्मा न न का नू काम दा रु वे नू ग ल्प न ४ स्व नू य ना र्ग म ध नू नि त्थ र्थ ॥
 पू जा दि वि धा य ॥ श्रु यो र्ध मा स्यां दू र्ज न न क स न न ध का मा वा धि काम ॐ मां ध नू वि षू द्धे व ना म मः
 क र्ग म ग्रा य त्या दि द क्रि षा ध नू स्य र्मा नै ॥ ॐ नि यं द ध नू दानं ॥ आ दि त्थ पू ना धी य कृ म्भ य नि मा ध

५१

इत र्ध नू दानां ॥ उ पा वि न ४ स म त्थ र्मां आ दि त्थ प न म ध नं ॥ पू ष्य धू या य दा नो ४ य धा वि रु व मा द न ४
 ॥ स क र्था इत र्ध नू कृ कृ म्भ क म रि पू जा वा पू जा यं द त्स दं ग द नू क र्ज न त्स म यं ग न ४ ॥ उ र्व सं पू ष्य
 आ दि त्थ इत र्ध नू स म त्स क्तां ॥ सि न व रु भ न ४ म नू वी न ना र्ग म वि स त्स न ४ द द्या दि डा या दं वा य
 यी त्थ र्थ मि हि न स्या द्वा आ दि त्थ म्भ ज ग द्या ति ४ धी य तां मि हि न ४ स द्या ॐ नि वा र्ध र्थ तां गा तु वि षा य य
 ति या द य नू ॥ श्रु य ना धा त्रि षा क र य म य श्रु त्ति स र्मं ग य ॥ श्रु न न वि धि ना द त्वा इत र्ध नू म ह्म मू ना स
 र्वा नू का मा न वा द्या ति या धा य क मा नू य ४ ग नी ना ना य मा धा य न म ४ स र्व का म का ४ ॥ नृ मां रु व नि
 द र्मा यं इत र्ध नो न स र्मं ग य ४ स र्व या य वि ति र्म क ४ वि न नं स पि ना म ह्म ॥ पु पि ना म ह्म न धा पूर्व पु नः
 ॥ ४ ॥ श्रु य नू ॥ श्रु मा न न न य यो र्ध न द ध र्मा च रु द य ॥ न न य त्स मू नी तु र्ध इत र्ध नू प्र दा न न ४ ॥ दो य मा

[illegible][illegible]

विधिनायया सार्धैर्वाधनून् रुमादिनयनधनून् यदया विधिनाऽमुना मृशत सर्वे ययस्य ४ सर्वान्
 कामानवाप्नुयात् ॥ यदुद्धी नवरुतथा यदुसर्धैर्वरुद्रुदा ॥ पायसा ४ कर्दमायुगु तस्मिन् लाकमहीयते
 ॥ कथं स्थामित्तमाश्रमि सदा यनमयायुगु ॥ दमपूजा नयनां सार्धैः श्रामानल्लवविंशति ॥ रुय ४ पृथ्वा
 ॥ गीतायाति ॥ रुताकसमानवश ॥ पुथर्म ॥ गमयायलिकरूता ॥ गकर्तुं वा वायायलिवत्त्वविंशतीरु ॥ १३
 गदये ४ नवरुतं वत्स ॥ विनवर्था गुरुवादी नदी ॥ वृत्तहीने ४ सययित्वा यथा विधिमुद्रालाहिनेयं
 यः ४ समनारुन ४ सयुक्त ४ दुरु नमिमा मसायका नायगु द्रोष ॥ प्रीयतां नदिनीदवी मद्रुलावर्द्धिकाडः
 माडमा ॥ ४ ॥ निवर्तिता नदी नूयं धीनां धनू मर्चयत ॥ दिऊयूडा दिवि वाय अयसर्चपाय विनिर्मूकि
 सर्वकामावाफिकी नवरुवदु नदी कसर्धैर्वरुवदु डे दकयाय स कर्दमलाकमहितलक्ष्मी नवरुवदु

नूनिनिकरधनो धनूडयकातीयगुद्या लनलंदागु ४ सनूययनोत्यहिमरगावसासुव लमङ्क ॥ गकोरावचु
 एथनालुमा लावत्तयनमकासा धनूडयवगुरुगयनिकल्लिब नससहितदया डं वदु कानि निकरधनूवदुका
 क्रितद्वय ॥ गवत्तया वासदातं ॥ दवद्वय ॥ धनूवदुका सादतं ॥ युमिख नादमखवया निवर्हि ४ सनूययः
 नोमिवसुव नाकास्यया गलता नारु लकलेमार्तु सत्यधनस्य कनिष्ठ ॥ धनूदानुवगुर्गुर्ल ॥ ॥ नूथः
 गुदला नादि दातं ॥ वक्रागुयु नारु नदि कथं वदवाच ॥ ४ ॥ नूना नदवक्रा मिस्त्रवदान विविंक्रमात् ॥ यत्तमं
 कीर्तनादवस्ययनु कानियावर्द्धी ॥ यथमागुठरानमु दितीया लावत ४ स्रुग ॥ य ४ म ४ य ४ ग ४ न ४ मु ४ य ४ क ४ का
 योसडयत ॥ सकमा मधूहानमु गं खरानलु था ४ म ॥ तमेवेरुनरानमु कास्यमु दमम ४ स्रुत ४ तुकादगम
 कोस्रुभा दाद ॥ ४ कां वत ४ स्रुत ४ रुलमूतानियुष्या निदयानिरु नैसखाया ॥ यलाता श्रीसरुमुदिरु नानमु यनि

[illegible][illegible]

मःडसायेनमः नलोतमः सत्येनमः मङ्गनायेनमः गिनिजायेनमः ॐ तिदादयनामहिः पूजायित्वाद्योश्रुतव
कृमाविनिष्टं गुठरावंस्तु प्रयित्वा ॐ विक्रमाधवी गोनी तन्नाह दाडयागिवा उमानतिः सगीतत्व मङ्गनागिनि
जाताधमिपूनः पुनः मुत्तावदक्षिणीकृत्य उमालेक्षीकृथा गोनी स्वधस्वाहासनस्तनी सत्यरामनिवागजा सुवध
वीविक्रमथा ॐ तिनांदवी संमुख्य सायक नमः गुठरावयूजादिविधाय ॥ अष्टासूक्तिमिरुदः खदीरुग्यलक्ष्मीका
न्यमूल्यलिकृत्य मनावच्छिन्नदवी साकमहि नत्व नमः फदीयाधिय नत्व रुवत काम ॐ मं गीययलसह मुदय
मिरुतावयूजामालाविरुविर्ग नकाचनयू गभयं यशुवत्तविरुविर्ग विदूदेवतमसूक गगनायत्यादिविर्गयः ॥
॥ अष्टासूक्तिनदानं ॥ पुण्ड्रुकमिलस्नातादिहावाकविधिविधाय सायक नमः लानयूजादिकृत्वा ॥ अष्टासूक्तिः
मिरुदः खदीरुग्यलक्ष्मीका न्यल्लयलिकृत्य मनावच्छिन्न साकमहि नत्व दूह नमः फदीयाधिय नत्व रुवत काम ॥

५१८

श्रीराजसगनद्वयविमिर्गुठरानं लवणरानं नेलरानं नार्क नाह नैवापूजामालाविधिरं नकाचनयूजायः
गीयं वनत्तविरुविर्ग विदूदेवतमित्यादि दक्षिणाहानस्यार्गं ॥ हानसंख्या मीययल २०० लोकिक संख्या
यामं न २३ ताला २२ मसा नती ५ ॥ ॥ अष्टादिल्लपू नावीयसिन्दू नदानं ॥ गगनायिषु कृतिलस्नातादि गोनीयूजादिमु
निययं नं गुठरानाकविधिताविधाय सायक नमः सिन्दूरानयूजादिकृत्वा धर्म १ सिंदूर नयूययज्ञ गदानं तद कामक
१ गिवायास्तु सदावन्तु १ गुहिरुमांदू १ कृताडुवि ॥ सिन्दूरान नयूयययाहि मी सर्वकामद ॥ यदानाह पुजायुष्टि
र्गम्यामुममादयः ॥ ॐ ति यठित्वा अष्टासूक्तिमिरुदः पुण्ड्रुसिन्दूर नयूययययवच्छिन्न निवाकिकवासः
हर्षयायविमूकियमलाकादं नयूजाना रयेऽयमानसकनक कामावाफिसोरायावेधय सर्वगुरुणा यनगुरु
याफियूयधोतादिसुतमिस्त्राम्यविश्रामादिसदा मुख्याधिकामा ॐ मं सिंदूरान नयूयययलसह मुदयमि

[illegible]

दित्यर्थः। चर्मोपकरणं नामालिप्याग्नीवाणीतिकात्त्यायनवचनात्कर्तव्यं नृसङ्घर्षे तदुपयोगकरं चेव च। लाभूतं
मोक्षिकेयुक्तं नित्यं नरं चेव चाहितं वाससमं कृत्वा वाससा कृते यद्वधशास्त्रसमं कृत्वा समस्तकृष्णजिनोः
कादने कृत्यं तथैव सुवर्णलारुणं नरं कुर्यादनेन क्रियादिरनवतः। न तैर्न चैर्यथा गच्छा भूयदीधेन आर्चयन्॥ नः
तैर्निविमुक्तामीलकावेदर्ये रंगमयवज्रविद्रुमपूष्यनागमनं कृती लानां नरं यथा यथा लक्ष्मणननं तत्र यस्तथा
थैव गन्धर्वेभ्यस्तथादिरिषाकां स्यादाग्राविचत्वा निद्रकृदग्रायथाक्रमं। मन्त्रं यत्प्रवयत्तु च पूर्वोदियुक्तं मन्त्रं
। यद्वर्गं नन्दविद्वोऽमवन्दत्वा यथाविधि। चमकस्य तथा गच्छा मन्त्रं कुरु मवचा वाक्कायस्तानकं कृत्वा
पुरुचिह्नानिवनयन्। जीर्णं वस्तु लयीत न सर्वाङ्गानि च मार्जयन्। कां स्यादाग्री निचत्वा निर्कां स्यादाग्री निः
शून्या निचमन्त्रयानियोगानि शून्या निचमन्त्रयानियोगानि शून्या निचमन्त्रयानियोगानि शून्या निचमन्त्रयानियोगानि

[illegible][illegible]

यगवृत्तं वा कर्तव्यं यथा शक्यं लं कृत्य पूज्यं यथा समर्प्य तं यथा सायक नष्टं कृष्णं डिन पूजादि विधाय कृष्णं कृष्णं वनादिवत्
 त्यादिसत्तु वर्यं यथित्वा त्रयाम्क निमित्तं समयं रुमिदा नरु न्यरु लसमरु लकामवा निविहृजमासक हृक सर्वलाः
 कचनलं दूगसं स्रवाना धिस्तर्जो वा कुरि क विहृयु म न धरा यो विथा ग ध न द ध य नि त्या ग न वा कि म नी री वरु
 ला वा कि क स रू दं र ग म था य लि फ डु वि द ग म ली र्ण ड म गु ना वि क व म्मा य नि स्रु सं ग ड स रू न य ग्री वा य नि स्ति न ना म क
 नू क ड ड नू य द न व दू मो कि क यू क ला डू ल स म स्रु नि ल यूर्ण सर्वे ना व म्मा च्छा दि न सूर्व र्ण ना रु था न कि न हृ ग य व ५३
 तु ना दि व दू ग न्ध वि र ग य गी र्ण रु न व तु दि मि न्द्रु क स्रु या न व तु य यू र्ण दि व तु दि क् पु द कि ड क मा व सि त म न्मः
 य या नु स्रु य न की न द धि क् ड य ध्या गी य वा म या दा त व नि ग नि ल यूर्ण ला दि न यूर्ण न ड न य ण म ध नि व नि न सूर्व
 य ण क र्ण द य नि व नि न पु न स्रु य ण म ध नि व नि न सूर्व य ण क र्ण द य नि व नि न पु न स्रु य ण द य य थ क म ना म

दिवाण स्रु ह म म्का वि ड् स वी ड यून क रू न व तु य नि व नि न व दू ड ड क रू लं कृष्णं डिन पुजाय नि दे व ना म म्
 क र ग ग्रा य म्क न म् र ग डि ड क रू सा या दि ना ग य उ स्रु म र्ण संप्र द द । प्री य ना म व तु ड ड रू ल कृष्णं डिन य नि
 ल ड ले र्ण नू रू स्रु र्ण नि वा द्म न्द्रु य नि व च नं । त ना य दि धा दा नं ॥ कृष्णं डिन पूज्यं ग रू र्ण य थ ग म र्ण का म स्रु नि
 डू डि ड ड क र्ण नू न ना य ड मा न स्रु डि ड वि नि यू य न स्रु र ग न् । न पू न र्ण न ग म् र्ण य नि यू र्ण नू । न र्ण वा द्म र्ण स्रु ग रू
 नू य ण स्रु ना न म धु य ग रू स्रु ना न क र्ण नू । कृष्णं डिन ना न वि क र्ण य दे क र म् र ग म् र्ण य क रू क रू ल न स्रु य य नू ।
 न ना य ड मा न यूर्व स्रु य नि डी र्ण यी न व म्मा ड म्मा ड र्ण वि धा न चान् ४ डु वि रू व नि न ग स्रु न यी न व म्मा ड म्मा ड र्ण स्रु
 दि र्ण नी ला व तु य र्ण क य नी र्ण ॥ ॥ अथ विहृज डिन दानं ॥ अथ देव म् र्ण यो र्ण मा र्ण्यी क रू स्रु ग डिन स रू व

सप्तमं नो यस्वर्गं नमूना लाङ्गल युकं कृत्वा विक्रमं यविगुणसावयतामनसि सेऽपसादयतामसर्वं नारुः
कुर्यात् नमूना नवासायुगनय कृदयतामसर्वं नले गन्धर्वं लंकुर्यात् नवतस्य वदिकृत्वा विनेडसानि
पाणिनिश्च नदधिमधुसर्पिः पूर्य निनिधायोहितामयवाक्त्रा यवासायुगपुकादिनायदयात् नमूना
रुवमियमुककाजिनंदेयान् सखर्नं नमूना संयुतं ॥ तिलेऽपुकायवासातिः सर्वं नले नलं कर्णससमूहकाननस
लोत्तवतं कानता चतुर्नका रुवदका पृथिवीनामसंभयः सायकनका ककाजिनपूजादिविधाय नमूना ३४
खपूर्णिमायांसिसमूहगुहाकसंलोत्तवतं कानतं चतुर्नका पृथिवीदानरुलसमरुलप्राफिकामं दं यवा
वासितकमलायनिगसखर्नं नमूना नो यस्वर्गं नमूना लाङ्गल विक्रमं यविगुणसावयतामनसि सेऽपसादयतामसर्वं नारुः
युगाकादिनसर्वं गन्धर्वं नलं कर्णससमूहकाननस लोत्तवतं कानता चतुर्नका पृथिवीनामसंभयः सायकनका ककाजिनपूजादिविधाय नमूना

सयागचतुष्टयकमूनाजिनं यजायति देवतममूकलायादितामयेवांसायुगकादिनायामूकलामोखावा
क्रमायत्यादिदक्षिणपूचगुरुधर्मा ॥ वेणुखधिका नवसिद्धाकककाजिनदानं ॥ मूर्वर्गं नारुं कृत्वा यः संखर्नः
कृत्वा मार्गकं ॥ तिलेऽपुकादयन रुस्यपूषारुलं नमूना ससमूहगुहाकनसंलोत्तवतं कानता चतुर्नका पृथिवी
वीदका पृथिवीनामसंभयः पूजादिविधाय नमूना खपूर्णिमायांसिसमूहगुहाकसंलोत्तवतं कानतं चतुर्नका
पृथिवीदानरुलसमरुलसमरुलप्राफिकामं दं त्वर्गं नारुसखर्नवदुगिलयकादिनककाजिनपू
जायति देवतमित्यादिदक्षिणपूचगुरुधर्मा ॥ वेणुखधिका नवसिद्धाकककाजिनदानं ॥ ककाजिनतिलानूकला
दिनधर्ममधुसर्पिः ॥ ददामियमुविषाया मूर्वर्गं नमूना देवतमित्यादिदक्षिणपूचगुरुधर्मा ॥ ददुर्गं पूजादिवि
धाय नमूना खपूर्णिमायांसि सर्वं ददुर्गं नमूना नमूना कामं दं दिनधर्ममधुसर्पिः तिलमूकककाजिनं यजायति देवता

[illegible][illegible]

अदिगवस्तिनयधिपूर्वकीसायावदधिमदिगवस्तिनयनपूर्वकृष्टयापणोनुनदिगवस्तिनकोदपूर्वपाणचतुर्दिगवः
 स्तिनः॥ चित्तुष्टयसूमियुर्नकृष्णजिनैयुजायनिदेवतममृकरगगायादिनामसर्वोऽसंपूर्वकायवा० संयुक्तायवा
 सायुगकायविद्वत्संयुक्तायामृकनर्मरवावाक्यभयतुष्टमहैसंपुदद॥ सर्वगुणयुक्तकृष्णजिनचदातीत्युक्ताताः
 स्तिनः॥ अतस्तत्तुष्टयनिगृहीतार्तुसुस्तीत्युक्तामृदिगयकृष्णजिनैयुनिगृह्णामीतिवदन्नामनादद्विषयपूवगुणान्॥ ३
 दानसागनचतसृष्टिद्वयचत्वारिंशतिनामनोयसोवर्धनामिषाठिवाद्युष्टयवादिषां चतुर्धकीनादीतांयथा
 संख्यंसमूहारावाक्यसुनोयसोवर्धनामनमदयवाचचतुष्टयगुणमिननुवसाकिनतामितिवाक्यरुहिरिर्नै।
 तस्मिन्पक्षचतुर्दिहतामनोयसोवर्धनामनयवावासायदानवाक्यतामादियदस्मान्नलन्ययदवर्कय० निवि
 र्नाय॥ ॥ कासिकायनागीयकृष्णजिनदाने॥ अथनृकादिपाणवैकल्यावस्तिनयनित्वावसमायुक्तं चतुष्टय

गमादिवस्तिनैः॥ यत्तत्तार्कसधार्कलं विरुवावससंयुगीलक्षवमुल्युग्मनेऽन्यतिच्छदयदिङ्॥ सादकंवायनंनृकं
 सगिलंन्यस्यनृकं॥ अतस्तत्तुष्टयनिगृहीतार्तुसुस्तीत्युक्तामृदिगयकृष्णजिनैयुनिगृह्णामीतिवदन्नामनादद्विषयपूवगुणान्॥ ३
 यत्तु॥ अथनविष्वक्वैवचत्तुष्टयसुष्टयगुणतथा॥ युगादोवायुयकृत्तिविधिनायतुर्वेदिङ्॥ नपितनयदमासायदधर्माः
 र्णविक्रान्नायुषाकी० कृत्तिविधिरुर्गो० कलानूयगुणान्तिनाश्रनूयदयैविक्रयदसधिकानागूवाकानूसांनैः
 कृष्णजिनायासादनैविक्रयसुवर्धनजनकासागांसायतमयावृत्तिमयसमाधायतुष्टयुजायनयद्वारुति
 कृत्वादिजकनसादकंसगिलंस्वर्धनं दत्वासायकनलकृष्णजिनयुजादिविधायग्रयसूकसमयवैष्वक्वयदयाष्ट
 रुनयुष्टायुर्दशांससमयावकिर्नकलानूयवद्रुगुणातिगविविधवद्रुगयुगासंकीर्तनकाम० दैविलडाव
 समायुक्तं चतुष्टयगारुभिरिर्नैः॥ यत्तत्तार्कसधार्कलं विरुवावससंयुगीलक्षवमुल्युग्मनेऽन्यतिच्छदयदिङ्॥ सादकंवायनंनृकं

॥ अथ सूक्तं वसु यम आदिना यमादकसिस्त्वर्गं रुक्मायत्यादि ॥ दक्षिणायुक्तं यमार्कं ॥ गगनसंभववाक्कर्म रुजयित्वा
यावियत्यविसर्ज्यतां सूत्वर्गं यलार्कं संस्था ऊनयकदानवाक्कयलार्कं यदयुक्तं य ॥ विरुवकीनमुसुस्यसविहिन
र्धनितडा वमध्वनिधायदशातू ॥ मूलवाक्कर्म मध्वसुमित्यर्थः ॥ ॥ गिलडा वदगकयुगयुक्तं जिनयाना ॥ गण
लेकनितडा वमध्वनितडा वदगकनिधायान्यनसर्वे पूर्ववदासायनार्थेवको कृत्या नथाविधमवद्विर्गं विधायः
गनूक नमादकसतिस्त्वर्गं कृत्या मूलादि विधाय नूआसूकसमयवेष्टवयदपाकूरुनगदूरुमयूनाधिकन ३१
वकं वृष्णा गुरुवतावधिमादनकामं दं नितडा वदगकसमयायुक्तं वसु यमार्कं विरुवकीनसूत्वर्गं यलमध्वसं
युक्तं कृष्णाजिनं यजापतिदेवतमसूक रगणायत्यादि दक्षिणायुक्तं नार्कं ॥ उक्तडा वविधिविधताननननमन
नवविधानं नदडा वदगकयुक्तं क ॥ नूवृष्णा गुरुवतावधिमादनसयूनारुम ॥ ॥ त्रिरिदमनू सर्वभगवतः

[illegible]

आदि कृत्वा ॥ यावत्संयुगाधाना नस्तथा रु वलं कृत्वा विविधं संप्रयुक्तं भवति कृत्वा किं न समस्य च वा कृत्वा यावत्
 दयता ॥ आ वा रु नं कामं कृत्वा चार्थं आ कृत्वा सिद्धिं मेषा कृत्वा कृत्वा किं न समस्य ले ॥ कृत्वा यत्नं यत्नी कृत्वा कृत्वा ॥ संयुज्यता
 मिति ॥ एवमुक्त्वा च गच्छता यथा दत्ता नू स्य दक्षिणां ॥ तिला रु नारु वरुणं वा कृत्वा नरु कृत्वा तिला रु नारु वरुणं
 र्थं ॥ एवमुक्त्वा किं न च तत्तनाधिगमक लभ्यते ॥ यिना मरु नू स मूद त्वा स्वर्ग याति लसं ॥ यथा गच्छता गच्छतां चि नं कु कृत्वा
 तिला यिना मरु नू स ॥ न नारु रु वा दियानि विष्णु ॥ यन रु दी नरु स मूया यं दानं पू व कानं नि मूय समा धाय रुः
 त्वा विविधं कृत्वा वं संप्रयुक्तं विष्णु सिद्धिं मेषा कृत्वा किं न समस्य ले ॥ कृत्वा यत्नं यत्नी कृत्वा कृत्वा ॥ संयुज्यता मिति तियः
 ॥ तिला रु नारु मरु स मय गमक लभ्यते कर्तुं कवदू यिना मरु मूद न ॥ यत्नं कृत्वा गमनं दधिक न ॥ वदू यिना यि
 नाम वि नरु ग कृत्वा रु न ल विष्णु यन यद गमनं कामं ॥ दं रु म मया यलिक च रु रु रु य मा न क रू म्या सी ॥ वदू व

३८

को य विन्यस्य कृत्वा निल संकुना य निन्यस्य सध सार्थि र्ग यक्षि फ सृ च र्ण यत्नं गुरु वदू वरुणं वा दिक लभ
 समुनि ग सृ च र्ण ना रु सख न वदू निल य कृत्वा दिक कृत्वा किं न यत्ना य नि दे व ग मि त्या दि दक्षि ण य कृत्वा
 रु नं ॥ ॥ कवदू वरुणं यत्नं कृत्वा किं न दानं ॥ कृत्वा किं न नु या दया द्रु गि न वदू वा निहा य धि वी रु स
 वा द्या नि या ग म्भ स्य वरुणं ॥ स स मूद गुरु न न स ॥ ल व न कान ना ॥ वदू वरुणं रु व दू वा य धि वी ना
 रु न य ॥ पू जा दि विधा य नू य य धि वी रु स या फि स या ग य दू हि स म मूद गुरु ॥ ल व न कान ना न च रु
 न क य धि वी दान रु स या फि का म ॥ दं कृत्वा किं न यत्ना य नि दे व ग मि त्या दि दक्षि ण य कृत्वा रु नं
 ॥ ॥ नू य रु मि दान ॥ गच्छतां रु मि द स र्व मा द्या नि ना रु यत्नं व ना दि रू ॥ या यत्नं काम य न स म रू ल मा
 द्या ती र्थं ॥ रु म्या दि पू जा दि विधा य नू य मरु स मय वा किं न रु ल काम ॥ मा मि यत्नं संख्या रु मि दिः

यदनी विष्णुदेवताममृकगणायं त्यादिदक्षिणार्धप्रदक्षिणार्धं ॥ यत्तु वत्सुहृमिदानं ॥ हृमिं वदत्त
 दत्ता स्वर्गमहीयत ॥ पूजादिविधाय ज्ञासुर्जलोकमहितत्वकामं मासियत्संख्यां हृमिं प्रियदत्ता
 विष्णुदेवतामित्यादिदक्षिणार्धदिवा ॥ वृद्धसिद्धाकरगवर्ममापुयनिमित्तमहीदानं ॥ यत्तु किं विदुः
 नृन्यायं जन्मपुरुतिमातं वः ॥ अथिचरगवर्ममापुयं हृमिदानं नमुद्रति ॥ गवर्मापुयं वदत्त
 यद्विदुः ॥ तद्विदुः गवर्ममापुयं दत्तु दत्तविदुः जनाः ॥ दत्तगवर्मनर्वं न नदत्तवत् ॥ नृममत्तनः ॥ यत्तु वदत्तः
 धिर्ददत्त दत्तगवर्ममापुयं दत्तु दत्तविदुः जनाः ॥ दत्तगवर्मनर्वं न नदत्तवत् ॥ नृममत्तनः ॥ यत्तु वदत्तः
 समयजन्मकृतसकनयाय दत्तय कामं मां गवर्ममापुयं हृमिं प्रियदत्ता विष्णुदेवतामित्यादिदक्षिणार्ध
 मापुयं हृमिदक्षिणार्धदानं दत्तु ॥ ॥ यमाकरुमिदानं ॥ तथा दत्तदक्षिणार्धमिदं वदत्त वदत्तलोकमहीयत ॥ पूजाः

दिविधाय ज्ञासुर्जलोकमहितत्वकामं मासियत्संख्यां हृमिं प्रियदत्ता विष्णुदेवतामित्यादिदक्षिणार्धप्रदक्षिणार्धं ॥
 ॥ आदित्यपूजाया गवर्ममापुयं दत्तु दत्तविदुः जनाः ॥ दत्तगवर्मनर्वं न नदत्तवत् ॥ नृममत्तनः ॥ यत्तु वदत्तः
 विष्णुलोकं सगच्छति ॥ पूजादिविधाय ज्ञासुर्जलोकमहितत्वकामं मां गवर्ममापुयं हृमिं प्रियदत्ता विष्णुदेवतामित्यादि
 त्यादि ॥ अथ गवर्मापुयं दत्तु दत्तविदुः जनाः ॥ दत्तगवर्मनर्वं न नदत्तवत् ॥ नृममत्तनः ॥ यत्तु वदत्तः
 दत्तगवर्मनर्वं न नदत्तवत् ॥ नृममत्तनः ॥ यत्तु वदत्तः
 मासियत्संख्यां हृमिदक्षिणार्धदिवा ॥ वृद्धसिद्धाकरगवर्ममापुयनिमित्तमहीदानं ॥ यत्तु किं विदुः
 नृन्यायं जन्मपुरुतिमातं वः ॥ अथिचरगवर्ममापुयं हृमिदानं नमुद्रति ॥ गवर्मापुयं वदत्त
 यद्विदुः ॥ तद्विदुः गवर्ममापुयं दत्तु दत्तविदुः जनाः ॥ दत्तगवर्मनर्वं न नदत्तवत् ॥ नृममत्तनः ॥ यत्तु वदत्तः
 धिर्ददत्त दत्तगवर्ममापुयं दत्तु दत्तविदुः जनाः ॥ दत्तगवर्मनर्वं न नदत्तवत् ॥ नृममत्तनः ॥ यत्तु वदत्तः
 समयजन्मकृतसकनयाय दत्तय कामं मां गवर्ममापुयं हृमिं प्रियदत्ता विष्णुदेवतामित्यादिदक्षिणार्ध
 मापुयं हृमिदक्षिणार्धदानं दत्तु ॥ ॥ यमाकरुमिदानं ॥ तथा दत्तदक्षिणार्धमिदं वदत्त वदत्तलोकमहीयत ॥ पूजाः

काधिकनयकसुखित्ववद्वद्वसहस्रावतामित्यादि॥दक्षिणादि॥ ॥निवयूनाधीयरुमिदान्त॥यूजादिवि
धायश्रुतिवयूनागमनयूर्वकद्वयवदात्तीयकल्यायनसहस्रसंख्याकचतुर्दशसहस्रावद्वितयथाः
सूरवसिन्धुवयूनासैनःयूनावनवितनल्लभनमहीनलयापिपूर्वकल्लवर्गजन्मयनमसुखयूनात्तका
मामियतुसंख्यारुमिमित्यादिदक्षिणादि॥ ॥मूलवर्द्धदिनव्यादातपुननल्लिखितमेव॥ननर्तिरूपः
नाधीयरुमिदान्त॥रुमिदान्तनगुह्यतल्लरुनल्लिखितमेव॥गुह्यतल्लयायायुविषयल्लिखितमेव॥
लक्ष्मीभायातादियुगमनीयूजादिविधायश्रुतिवयूनासैनःयूनावनवितनल्लभनमहीनलयापिपूर्वकल्लवर्गजन्मयनमसुखयूनात्तका
दिदक्षिणादि॥ ॥मूलवर्द्धदिनव्यादातपुननल्लिखितमेव॥गुह्यतल्लयायायुविषयल्लिखितमेव॥
लक्ष्मीभायातादियुगमनीयूजादिविधायश्रुतिवयूनासैनःयूनावनवितनल्लभनमहीनलयापिपूर्वकल्लवर्गजन्मयनमसुखयूनात्तका

होयाने॥ ॐ ह्रीं । रुद्रसक्तर्ताहर्मियवत्तमधूममातनीं । याददादिसून । अष्टधूननादहिननसभायुजादि विधाय अ
 श्रयूननावहिका ॐ मामियतुसंखाका । सकसक्तर्तायवत्तमधूममातनीं । ह्रीं मिदप्रियदर्शनविष्णुदेवतामित्यादि
 दक्षिणाहर्मियदक्षिणाहर्ण ॥ ॥ निःश्वन्नसस्ययुक्तहर्मिदान ॥ महीं ह्रीं ताच ददात सवैकामगुणादि रक्षा नडाः
 विनाडाहर्णवनिनदद्विदानमनूहर्ण ॥ ह्रीं गान्निःश्वन्नसस्ययुक्तो सवैकामगुणादि रक्षा योचहर्मिगुणसहितायुजा
 दिविधाय अश्रयनाजाविनाडाहर्णवनिनकाम ॐ मामियतुसंखाका । ह्रीं तां सर्वकामगुणादि रक्षा ह्रीं मिदप्रियदर्शनविष्णुदेवताः
 मित्यादिदक्षिणाहर्मियदक्षिणाहर्ण ॥ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं मिदना । ह्रीं ह्रीं मिददद्विधु । पूर्णप्रियमवाधूय । ह्रीं ह्रीं ह्रीं मिदअन्यान्
 ह्रीं ह्रीं ह्रीं मिदयुजादिविधाय अश्रययुगप्राप्तिकाम ॐ मामियतुसंखाका । ह्रीं ह्रीं ह्रीं मिदप्रियदर्शनविष्णुदेवतामित्यादि दक्षि
 णाहर्मियदक्षिणाहर्ण ॥ ॥ वासुहर्म्यादिदान ॥ निवर्णमालां दत्तातां वसतां नाश्वरावत ॥ दानानां प्राप्तिगानां अश्रय

काऽसुखं गमयितुं नानां वासु कुवावसनीनां ग्रामस्य वंद्यवर्नं दाहवद्ववायद्वयायूजादिविधाय अथ स
 र्जगमतकामं मां निवर्तनरू मिप्रियदर्शनं विष्णुदेवतामित्यादिदक्षिणरू मिप्रियदर्शनं ॥ ॥ अथ रू मिदानं ॥
 दिदानं यमद्वरुलं ॥ रू मिदानं ॥ विष्णुयुक्ता रू ॥ किमिप्रियादिजातिरू अथ यावु विविधं ॥ ननु विविधं गीता
 पुष्पलाकसहानुगं ॥ विविधकामरागे प्रसन्नमानानना रू मां ॥ यूजादिविधाय अथ विविधं गमनं
 दधिक नयक विविधकामरागप्रसन्नमानसहानुनात्मीयानवविकानपुष्पलाकवासकामं मां मियनसं रू कां ॥ ॥
 रू मिप्रियदर्शनं विष्णुदेवतामित्यादिदक्षिणरू मिप्रियदर्शनं ॥ ॥ अथ रू मिदानं ॥ अथ रू मिदानं
 त्यागु मां नानाकामं ॥ यूजादिविधाय अथ मानसलाकावाकि कामं मां वां रू मिप्रियदर्शनं विष्णुदेवतामि
 त्यादिदक्षिणरू मिप्रियदर्शनं ॥ अथ रू मिदानं ॥ अथ रू मिदानं ॥ अथ रू मिदानं ॥ अथ रू मिदानं ॥ अथ रू मिदानं ॥

विविधनिच। सर्वकामसमृद्धिः सामलोके समन्तात्। तद्वर्षसहस्रादि सकलित्वापत्तर्नवधं० रु सर्वधनायगरू।
गवानादिजायन्। डावधया मृगाद्याः धान्यानि विविधानि कलमादीनि। पूजादिविधाय श्रुतसर्वकामसमृद्धिमला
त्मीयसामलोकाय संगसकवर्षसहस्रावच्छिन्नैर्गन्धाकावसानपूर्वकमर्त्यलोकाधिकसर्वधनायगरू। गवक्रमः
कामपुनानिधान्यानीत्यादिदक्षिणामूर्ध्वगुरुगार्क॥ मृगादिषु यत्तद्वर्तते॥ ॥ यद्रुवत्काकधान्यादानं॥ धान्यं
युक्त्यदत्वात्यर्कसूखीरुवत्॥ पूजादिविधाय श्रुत्यात्यन्तसुखितरुवनकामपुनानिधान्यानि प्रजापतिदेवताः
नीत्यादिदक्षिणामूर्ध्वगुरुगार्क॥ ॥ विष्णुधर्मोक्तं ननकभालिदानं॥ ननकभालितया दत्वा स्वर्गलोकमहीयन्
। पूजादिविधाय श्रुत्यसूर्यलोकमहितत्वं काम० ननकभालिं प्रजापतिदेवतामित्यादिदक्षिणामूर्ध्वगुरुगार्क॥
न॥ ॥ सृगन्धिभालिदानं॥ तथा दत्वा सृगन्धं० गन्धर्वः सहसा दत्त॥ भालीनिमित्तं यः पूजादिविधाय श्रुत्यवदू

गन्धर्वसहस्रमादतकामनुगानि सुगन्धिभासो न युजायति देवतामित्यादि दक्षिणामूर्तिग्रहणार्थं ॥ ॥ कनसदानं
 ॥ कलमानां युजायति न सामसाकं महीयत ॥ यूजादिविषयः श्रुशसामसाकमहि नत्वकामनुगान् युजायति देव
 तान् ॥ ॥ त्यादि दक्षिणामूर्तिग्रहणार्थं ॥ ॥ काष्ठभासिदानं ॥ काष्ठभासि ननादत्वा श्रुलं कार्यायमादत ॥ यूजा
 दिविषयः श्रुशतकाधिकनयकप्रभादकाम ॥ ॥ मां काष्ठभासि युजायति देवतामित्यादि दक्षिणामूर्तिग्रह
 णार्थं ॥ ॥ वक्षुवृद्धिदानं ॥ वृद्धीनां श्रुप्रभाभातां दानात्सर्वमवाप्नुयात् ॥ वृद्धयः ॥ नदायुधायानि श्रुयः
 साननातां वक्षुतां यूजादिविषयः श्रुशस्वर्गयाफिकाम ॥ ॥ नदीहीनं युजायति देवतामित्यादि दक्षिणामूर्ति
 ग्रहणार्थं ॥ ॥ यवदानं ॥ यवप्रदानेन तननं ॥ कुलाकमहीयत ॥ यूजादिविषयः श्रुशकुलीकमहि नत्व
 कामनुगान् युजायति देवतामित्यादि दक्षिणामूर्तिग्रहणार्थं ॥ ॥ रगधूमदानं ॥ रगधूमदानेन तनन

१५

नानिच्छया तया रुद्रराघमया ॥ ॥ तेनादि श्रुयायलं कना ॥ कष्टप्रवृत्तानि त्वं मूर्तिष्ठनि वागुत ॥ ॥ रुद्रराघ
 नथयाने ॥ ॥ कुप्रमानां नथयानेन ॥ ॥ प्रयथो वृत्त ॥ ॥ सत्कुरुत्वा नथयानेन ॥ ॥ गन्धमात्येन लंका नेष्ट ॥ ॥ काष्ठनि
 त्यग ॥ ॥ गन्धर्वेन यगीनामु दानानि धयत त्वना ॥ ॥ धर्मज्ञा ॥ ॥ सत्यग ॥ ॥ लाघु सर्वदृष्टव विवर्तिना ॥ ॥ मिदक देवते ॥ ॥ सार्द्ध
 नित्यकातामो हामने ॥ ॥ यूजादिविषयः श्रुशप्रयथय रगावर्तं पूर्णं वृद्धिस्वर्गसाकाधिकनयकमहाकाशेन विधि
 तव दया नागलं सेविन वक्षुविमानाय किमिदिवा नुयालं कन कष्टप्रवृत्तलं कर्तुं कमित्यस्वारणा यत्वा सुनव
 दुरुत्वा नथयानेन कनयक कुप्रनासि वक्षुप्रयथो वृत्तनिवृत्तत्वरुत्वा नथयानेन कत्वदेव गन्धमात्येन वदतः
 लंका नयकनित्यकुरु वृत्तवक्षु गन्धर्वेन यगीयमानत्वे दानदिग्धय नयन त्वधर्मोक्तु सर्वदृष्टव विव
 र्तिनत्वेनित्यकातिकवक्षु दं वगमहाभादतकाम ॥ ॥ दमर्तं युजायति देवताममृकरागयायत्यादि दक्षिणामूर्ति

सुसंस्कृतं ॥ वक्तुं वाक्यं सु विमानेऽहि न तयोऽया निगन्धर्व वादि ३ स्यामाना यमानयी ॥ पूजादिविधाय ज्ञ
 गन्धर्व वादि गुप्तं यमानं कानि च वक्तुं वाक्यं वा विहिन न तयो वद विमान कनक केव वस्त्रान यगमन काम ० दं धि
 सुसंस्कृतं विदु देव गमित्यादि दक्षिणा स्थगार्क ॥ ॥ विदु धर्मो नीय धिदानं ॥ गथा द ॥ पुदानं न स ॥ न्या ना यान
 सदा ॥ पूजादिविधाय ज्ञ साधु दिक म ॥ न्या ॥ दिकाम ० दं धि विदु देव गमित्यादि दक्षिणा स्थगार्क ॥ ॥ वा ना रु त्तु
 दान ॥ पूजादिविधाय ज्ञ यि गु गु फ पा धं गमन न दं ग वरि प नृ य पू र्ण त्व र ग न स पू र्ण रोजन स द सु वा न्ध व संप्रदा ६२
 न क दान या न त त्व र न व द व र्ण म ता व द्धि न व द सु न्द न ना नी स य मा म व म ग म क न य ३ स म्प त्प स्या नू न्य र ग ता क
 न क काम वा र्ण त्व र व न काम ० दं विदु देव गमित्यादि दक्षिणा स्थगार्क ॥ मूल वा क्य न्द धि दान प्र क न र ति य
 तं ॥ ॥ विदु धर्मो नीय दान ॥ दी न द सु फि मा प्रा नि सर्व द ३ र्थे ३ पु म्प दान ॥ पूजादिविधाय ज्ञ य र्ति प्रा कि त र्व द ३ स

विमुक्ति काम ० दं दी नी विदु देव गमित्यादि दक्षिणा स्थगार्क ॥ ॥ न दि पू ना नी य सु स संस्कृत द य दान ॥ पूजादि
 विधाय ज्ञ गन्धर्व वादि गुप्तं यमानं त्व समान कानि च वक्तुं वाक्यं वा विहिन न तयो वद विमान कनक केव वस्त्रान यगमन काम ० दं धि
 यगमन काम ० दं सुसंस्कृतं ॥ दी नी विदु देव गमित्यादि दक्षिणा स्थगार्क ॥ ॥ ज्ञ धर्मी न दान ॥ नृ स व र्ण क द न सदा
 ता ॥ गु उ मि क न स र्ण व ल व र्ण यं ज ना ति वा स न री नि च या ना नि द त्वा त्थ र्क सु र वी रु व न ॥ पूजादिविधाय ज्ञ सा त्थ र्क
 सुखि त्व रु व न काम ० मा मि क न स र्ण मा म दे व गमित्यादि दक्षिणा स्थगार्क ॥ ॥ पु उ दान ॥ पूजादिविधाय ज्ञ सा त्थ र्क
 त्व रु व न काम ० मं गु र्ण मा म दे व गमित्यादि दक्षिणा स्थगार्क ॥ ॥ न दि पू ना नी य गु उ दान ॥ पूजादिविधाय ज्ञ गन्धर्व
 वादि गुप्तं यमानं त्व समान कानि च वक्तुं वाक्यं वा विहिन न तयो वद विमान कनक केव वस्त्रान यगमन काम ० मं गु
 उ स संस्कृतं मा म दे व गमित्यादि दक्षिणा स्थगार्क ॥ ॥ विदु धर्मो स्व पु दान ॥ स्व पु द म्प सो रा ग्यं पूजादिविधाय ज्ञ

मोक्षाय वायिकामासुखसामदेवतमित्यादिदक्षिणस्यार्थकं ॥ ॥ विष्णुकसधुदानं ॥ मधुघृतनेलदानमात्राय पूजा
 दिविधाय अथ वायुयायिकामं दं मधुविष्णुदेवतमित्यादिदक्षिणस्यार्थकं ॥ ॥ नक्षत्रवाणीयसुसंस्कृतमधुदा
 नं ॥ पूजादिविधाय अथ गन्धवादिप्रसन्नमासमानकालिकचक्रवाकसंवाविगदि न्नमयवद्विमानकनयकधर्म
 नाजानयगमनकामं दं सुसंस्कृतं मधुविष्णुदेवतमित्यादिदक्षिणस्यार्थकं ॥ ॥ मूलवार्कं दधिदानलिखितं ॥
 ॥ विष्णुधर्मोक्तनीयमधुदानं ॥ सर्वानकामान् मधुप्रदः पूजादिविधाय अथ वायुसंखितरुवनकामप्रदानिसूक्ति ८३
 यानकानिविष्णुदेवतमित्यादिदक्षिणस्यार्थकं ॥ ॥ मस्तुत्ताननीययानकदानं ॥ अथ यानप्रदानं नृपयानककामः
 आगतः ॥ पूजादिविधाय अथ कामसूत्रगयायिकामं दं यानकं विष्णुदेवतमित्यादिदक्षिणस्यार्थकं ॥ ॥ विष्णुधर्मो
 क्तनीययानकदानं ॥ वान्धुलोकमाप्नामि तथा यानकप्रदानं ॥ पूजादिविधाय अथ वान्धुलोकयायिकामं दं

यानयानकं विष्णुदेवतमित्यादिदक्षिणस्यार्थकं ॥ ॥ सुगन्धिद्रव्ययुक्तगीतलयानकानाद्यानं ॥ यानकानासुगन्धीनां
 गीतलानियुक्तं ॥ सर्वकामसमृद्धिः स्यात्तत्प्रकार्यविशेषः ॥ पूजादिविधाय अथ सर्वकामसमृद्धिः सर्वकाम
 प्रदानिसुगन्धिगीतलयानकानिविष्णुदेवतमित्यादिदक्षिणस्यार्थकं ॥ ॥ यानकं तद्वर्णवैश्यामु ॥ ॥ गोमूत्रमम्रमः
 तम्रम्रा यानकं सूत्ररीकर्तुं तद्वत्प्रदु मृष्टीका ॥ ॥ कर्तुं वासादिर्गन्धपूतः ॥ साम्बुसुतीर्कं सहिर्मयानकं स्यानिवत्यर्थं
 यनृवकाणां कोनानां द्रव्यविष्णुयानकं ॥ कोलाता नदवार्धं ॥ विष्णुधर्मोक्तनीयसंक्रदानं ॥ तच्छ्रद्धाया नसीताकं
 याप्रातीमिमाषः ॥ तच्छ्रद्धाया कृत्वा पूजादिविधाय अथ वायुसंखितरुवनकामप्रदानिसूक्ति ८३
 दिदक्षिणस्यार्थकं ॥ ॥ तद्वत्प्रदानं ॥ नसुतामायेवाद्यद ॥ वायुमासा पूजादिविधाय अथ वायुसंखितरुवनकामप्रदानिसूक्ति ८३
 विष्णुदेवतमित्यादिदक्षिणस्यार्थकं ॥ ॥ अथ नैलदानं ॥ तदुमत्तं मधुघृतनेलदानं नानायां याप्रातीमित्यर्थः ॥ पूजा

[illegible]

देवर्ष्यं न देवतमित्यादिदक्षिणस्यार्धं ॥ मूलवाक्यगन्धदानलिखितमव ॥ ॥ कूंकुमदानं ॥ सोलाग्यकात्रकं धाकं प्रदा
नं कूंकुमदानं ॥ पूजादिविधायः श्रृंगसोलाग्यपुष्पिकामः ॥ देवर्ष्यं न देवतमित्यादिदक्षिणस्यार्धं ॥ ॥ कसूनि
कादानं ॥ मृगदण्डदानं तस्य गसापुविनाशनं ॥ पूजादिविधायः श्रृंगसोलाग्यविनाशनं तत्त्वकामासं मृगदण्डं गन्धर्वदेवत
मित्यादिदक्षिणस्यार्धं गमदण्डकमुनिका ॥ ॥ मार्कण्डेयपूजादीयवन्दनदानं ॥ गार्ग्यकीर्तनदाहायकूच
नदायिनः ॥ पूजादिविधायः श्रृंगसोलाग्यपुष्पिकामः ॥ देवर्ष्यं न देवतमित्यादिदक्षिणस्यार्धं ॥ ॥ विष्णु
धर्मोक्तनीयवन्दनदानं ॥ तव वन्दनदानं सर्वपापेऽप्यमुच्यते ॥ पूजादिविधायः श्रृंगसोलाग्यविनाशनं तत्त्वकामासं मृगदण्डं गन्धर्वदेवत
मित्यादिदक्षिणस्यार्धं ॥ ॥ स्नाताविनसृगच्छिदुश्चदानं ॥ पूजादिविधायः श्रृंगसोलाग्यविनाशनं तत्त्वकामासं मृगदण्डं गन्धर्वदेवत
मित्यादिदक्षिणस्यार्धं ॥ ॥ वन्दनं कूंकुमापुनः कर्ष्यं न कमुनीजातीरुत्ताताम

न्यतमदानं॥गन्धमात्यपुदानंननुचिरुवतिनिधत्ता॥पूजादिविधायश्रुतिधत्तलुद्विप्राधिकामं०देवन्दनगन्ध
 देवतमित्यादिदक्षिणास्यर्गर्कं॥कृत्वादिगन्धदानंयोदमवरुर्न॥॥श्रुतानुसयनदानं॥तत्तुमहासायनमुपयग
 न्धानुसयन॥निस्त्रानानिमात्यानिवमानवायः॥दद्याद्विजुलः॥सरुवदनागसुधारिन्त्ययननन्दुलाका॥देववदुला
 यकयावदुवचनंयूजादिविधायश्रुतनन्दुलाकाधिकनयकानोगन्धारिन्त्ययननन्दुलाका॥देववदुला
 देवतमसूकरगात्रायात्यादिदक्षिणास्यर्गर्कं॥॥विष्णुदानुसयनदानं॥श्रुतानुसयनदाननकीर्त्तिमानरुवति॥पूजा ६३
 दिविधायश्रुतकीर्त्तिमन्तुवतनामं०दमन्तुसयनं॥गन्धदेवतमसूकरगात्रायात्यादिदक्षिणास्यर्गर्कं॥॥श्रुत
 धूदानं॥तत्तुयमः॥डुर्गादिमन्त्रादिभिर्यमुधूयदुदानंन॥पूजादिविधायश्रुतडुर्गादिगतिप्राप्तिकामां०धूपं०गन्धदे
 वतमित्यादिदक्षिणास्यर्गर्कं॥धूपदानं०धूपयकसुनरिदुवादानं॥॥नक्षिपूनाहीयधूपदानं॥धूपदः॥सुनरिनिर्त्य

शोदानं॥यमुधूययकनश्रीर्त्तननसरुमः॥सडुर्गायाः॥प्रियादिद्यावद्वीरुकाः॥समपूत॥सास्त्रीर्त्तनश्रीयनि
 विसृतरुगुरुनक्षत्रिकादिनूयामायाजादिविधायश्रुतप्रियदिवारुकवदुलायावाधिकामं०मां०सास्त्रीर्त्तनयासायक
 नन्धामूकानादिनादेवतामित्यादिदक्षिणास्यर्गर्कं॥॥आरुवल्कीयगयादानं॥दत्तात्यर्कं०सुखीरुवतुपूजादिविधाः
 यश्रुत्यात्यन्तिकसुखितरुवनकामं०मां०यासायकनन्धामूकानादिनादेवतामित्यादिदक्षिणास्यर्गर्कं॥॥विष्णुधर्मा
 र्कनायगर्गदानं॥रत्नादिजायगयनं०सास्त्रीर्त्तनसां०नकुदं०कलतिमरुतिमं०रुतीनूयद्विधसंयुतं॥तथायकवती
 रुतीप्राप्तिवगगन्ध॥श्रुतननुयाननसाययतिमवाश्रुयात्॥यकवतीकृदुमिनी॥पूजादिविधायश्रुतमहा
 कलसं०रुतनूयद्विधसंयुतं०यकवदुलागगर्गायाधिकामं०मां०यासास्त्रीर्त्तनसां०दुवचुदामूकानादिनादेवतामि
 त्यादिदक्षिणास्यर्गर्कं॥॥श्रीर्गं०यादानं॥पूजादिविधायश्रुतमहाकलसं०रुतनूयद्विधसंयुतं०यकवदुलागगः

यदियदि कामा ॐ मां न यो सास्ती र्भूमा रु न कृदा मूना नाङ्गि अदेवतामित्यादि दक्षिणास्यर्गर्ग ॥ ॥ कामती यथ
 र्गोदाना ॥ सुगन्धिविग्राह न रत्ना य धनं दद्यात्त नो य ४ न य नै दिजाया ॥ नृपा वा य कृवती मना र्गो कार्या मयत्ता यठिर्गो
 तरु न स ४ य जादिविधाय अश्रु नृपा नि न य कृव न्म क्का यथा विन कार्या पादिका म ॐ दं सुगन्धिविग्राह न रत्ना य धनं द
 य न मूला साङ्गि न्नामित्यादि दक्षिणास्यर्गर्ग ॥ ॥ य नै ख द्वा य म ॥ ॥ अथासन दानं ॥ नृप सु न्द आसनं य ४ पु य कृदु स
 यी ० वृद्धा वयो सना कृत्त न मा ति स्वर्ग मा ध्या दि वि क ल ४ ॥ ना कृत्त नै ना ज्ञा स नै यी ० स या द यी ० य जा दि वि धाय ३ २३
 नृप वि क ना ती य ना कृत्त न र्गो कार्या पादिका म ॐ द मा स नै स या द यी ० य जा य ति दे व त मि त्या दि द क्षि णा स्य र्ग र्ग ॥ ॥
 आदित्य पूजा यी या स न दानं ॥ सुगन्धिविग्राह न रत्ना य धनं दद्यात्त नो य ४ न य नै दिजाया ॥ नृपा वा य कृवती मना र्गो कार्या मयत्ता यठिर्गो
 कृत्त म र्ग ल्प रु स न र्ग ॥ अम स्या जा ति य न र्गो द्या धि य त्वा र्गो म न्म मि ति सा ग न ४ पू जा दि वि धाय अश्रु नृपा नि न य कृव न्म क्का यथा विन कार्या पादिका म ॐ द मा स नै स या द यी ० य जा य ति दे व त मि त्या दि द क्षि णा स्य र्ग र्ग ॥ ॥

माधियत्य नारु समगु क ल म र्ग ल्प या दि काम ॐ दं सुगन्धिविग्राह न रत्ना य धनं दद्यात्त नो य ४ न य नै दिजाया ॥ नृपा वा य कृवती मना र्गो कार्या मयत्ता यठिर्गो
 त्यादि दक्षिणास्यर्गर्ग ॥ ॥ वृद्धा वयो सना कृत्त न मा ति स्वर्ग मा ध्या दि वि क ल ४ ॥ ना कृत्त नै ना ज्ञा स नै यी ० स या द यी ० य जा दि वि धाय ३ २३
 धाय नि वे स र्वा सु व र्ग म धि यी २० या दो क ल्प रु स न र्ग ॥ अम स्या जा ति य न र्गो द्या धि य त्वा र्गो म न्म मि ति सा ग न ४ पू जा दि वि धाय अश्रु नृपा नि न य कृव न्म क्का यथा विन कार्या पादिका म ॐ द मा स नै स या द यी ० य जा य ति दे व त मि त्या दि द क्षि णा स्य र्ग र्ग ॥ ॥
 या व र्ग ल्प आ स नै रु द्रा स नै यी ० धि पू जा दि वि धाय अश्रु नृपा नि न य कृव न्म क्का यथा विन कार्या पादिका म ॐ द मा स नै स या द यी ० य जा य ति दे व त मि त्या दि द क्षि णा स्य र्ग र्ग ॥ ॥
 स न र्ग ल्प रु स न र्ग ॥ अम स्या जा ति य न र्गो द्या धि य त्वा र्गो म न्म मि ति सा ग न ४ पू जा दि वि धाय अश्रु नृपा नि न य कृव न्म क्का यथा विन कार्या पादिका म ॐ द मा स नै स या द यी ० य जा य ति दे व त मि त्या दि द क्षि णा स्य र्ग र्ग ॥ ॥
 नै ॥ ॥ विष्णु धर्मा रु नी या स न दानं ॥ न न ह्मा स न न न स र्ग वि न्द मि ॥ पू जा दि वि धाय अश्रु नृपा नि न य कृव न्म क्का यथा विन कार्या पादिका म ॐ द मा स नै स या द यी ० य जा य ति दे व त मि त्या दि द क्षि णा स्य र्ग र्ग ॥ ॥
 मा स नै य जा य ति दे व त मि त्या दि द क्षि णा स्य र्ग र्ग ॥ ॥ वृद्धा वयो सना कृत्त न मा ति स्वर्ग मा ध्या दि वि क ल ४ ॥ ना कृत्त नै ना ज्ञा स नै यी ० स या द यी ० य जा दि वि धाय ३ २३
 वृद्धा वयो सना कृत्त न मा ति स्वर्ग मा ध्या दि वि क ल ४ ॥ ना कृत्त नै ना ज्ञा स नै यी ० स या द यी ० य जा दि वि धाय ३ २३

नावाफि कामं दैवमुसंवीगासतमूला नाभिनादेवतमित्यादिदक्षिणार्धार्थं ॥ ॥ विष्णुधर्मोक्तं नीययादयी ० दान
 ॥ यादयी ० पुदाननस्तुतं सर्वं विवृति ॥ पूजादिविधाय श्रुतसर्वं स्नानलारुयाफि कामं दैवयादयी ० पुजायमिदं
 तमित्यादिदक्षिणार्धार्थं ॥ ॥ वाक्कायादयी ० दान ॥ पूजादिविधाय श्रुतसखाधगमनवदस्वर्गमविपीअधिक
 नलकयादयक नलकनदुलनायनागममपुतवदुविमानकनगकागमनकामं दैवयादयी ० पुजायमिदं व
 तमित्यादिदक्षिणार्धार्थं ॥ ॥ मूलवाक्कायासतदानलिखितं ॥ ॥ मल्लारुनीयकायकादकादान ॥ वाक्कायसुगीता १४
 संयादयात्कायकादकासवाहननदिवातदिवंगकुमिरागवाना पूजादिविधाय श्रुतदिवारुतकनलककाग
 वादात्मीयसुगममनकामं मकायकादकविष्णुदेवतमित्यादिदक्षिणार्धार्थं ॥ ॥ अदित्यपूनादीयकाय
 यादकादान ॥ श्रुतवायदियुगं लारुवाधयादकादकागिय ४ पुदाननं वाक्कायसुगममन ॥ गत्यदिव्याधियाधानि

१४

नथधनयसाफिन ॥ ३४ ॥ यत्ननवेवरु विष्णुमिकथं वन ॥ पूजादिविधाय श्रुतदिव्यामानधउयकाकाचिगन
 अयोकोहिकदुधमार्जवहिनलकामं मयादकविष्णुदेवतनीत्यादिदक्षिणार्धार्थं ॥ ॥ श्रुतयापानदानं ॥ गनु
 विष्णु ४३ यासतपुदाननाधतनीयूकनर्थप्राप्तामिनिगय ४ पूजादिविधाय श्रुतान्तवीयूकनथप्राफिकामं मंडया
 नलवृत्ता नाभिनादेवतमित्यादिदक्षिणार्धार्थं ॥ ॥ नदिपूनालीयपुवासिदानकादानदान ॥ उपानलौवयदशा
 वाक्कायायवासिन ॥ सगजमुनरोयाति यथयधिमल्लसुखा पूजादिविधाय श्रुतवदुगजवदुगुनगकनगमल्लसुख
 यासुखधगमनं मंडया नलउल्लानाभिनामित्यादिदक्षिणार्धार्थं ॥ ॥ याक्कवल्लियापाददान ॥ गुरुकात्तोरुयापा
 नकगमाल्यानूलयनं ॥ यानं वरुं प्रियं तयां दत्तात्यर्कं सुखीरुवत ॥ पूजादिविधाय श्रुतत्यक्तसुखिचरुवनकामं
 मंडया नलवृत्ता नाभिनादेवतं त्यादिदक्षिणार्धार्थं ॥ ॥ मल्लारुनीयापानदान ॥ दक्षमानायविषाय ४ पुयदु

प्रयानहो॥स्नातुकरामहवाहासंछितायदिज्ञाय॥ससाका नवाप्रातिद्वयनेनयिद्विगानारगसोकनमदायुका
 वसतिप्रत्यमानव॥यूजादिविषयःश्रुतवद्देवतयूजितवद्दसाकावाफियायस्वामरुच्यैयूकात्मकहृकरगला
 काधिकनयकवासकामंमडयानहृदनादिद्वयनत्यादिदक्षिणाभाहृताकै॥॥वद्दवाक्यसंप्रदानकीयानदा
 न॥उयानहृदयगदशातुमरुगल॥समाहित॥समर्द्धकगुकाससर्वानविषमातसकनत्यपि।गणस्यविषमः
 निचयूधिविनिनायानैवाध्वतनीयकैशुरुतस्यविनिनयत॥उयतिवृत्तिकोक्तयनूयकाश्रुतहृदिनै॥सकटद्वयसंयु
 क्तैदकैरुवतिववदि।कटकांनदद्यानयूजादिविषयःश्रुतसर्वककविर्देनवद्दविषसमकनयवद्दगुयनि
 वासनहृदयनयूयकाश्रुतहृदिताम्यतनीयकगुरुयानयाफिद्वयसंयुक्तकटदानकन्यारुससमरुतयाफिका
 मंमडयानहृदनादिनादेवतं॥त्यादिदक्षिणाभाहृताकै॥॥नानसिडयानदान॥यूजायानहृदयानवस्तु
 है

तीत्यादिदक्षिणाभाहृताकै॥॥सकटमागुदान॥नकटस्यप्रदानतुवितागमिर्महारुली।विषयवामहृदयाम
 सुत्यरुगलियुतस्यवावद्दवचनद्वयवदुद्वययुतस्य।यूजादिविषयःश्रुतसर्वककविर्देनवद्दविषसमकनयवद्दगुयनि
 दिनादेवतमित्यादिदक्षिणाभाहृताकै॥॥समर्द्धककटदान॥ससर्द्धककटद्वयताकलोकमदीयत॥यू
 जादिविषयःश्रुतनाकमदीगतकामं॥दंगकटससममूकानादिनादेवतदिदक्षिणाभाहृताकै॥गडका
 न॥वाध्वनर्थगडवापिवाक्यरुवप्रतिपादयत्॥सगकस्यवसहृदयधामकोयुगनूदभायायान्कवाधमानूय
 नाजारुवतिमदिमान॥यूजादिविषयःश्रुतगडकाकाधिकनयकदमयुगावद्विन्नकवद्ददगतदुहनमन
 यसाकाधिकनयकसमद्विमडाकलुवनकामासुंनथंयूजायतिदेवतमित्यादिदक्षिणाभाहृताकै॥गडदान
 यमदवरुली॥॥अथयूजादासादियानै॥नमहारावनवेताहिनानीदुष्टाधायैष्वाधश्रुधिविनिनादानाः

वाससीवेव पुनः ४८ सर्ग गमिनः ॥ पूजादिविधाय अथ पूजाय विधि देव गम मुक्त
 गायत्र्यादि दक्षिणास्यार्चनं ॥ ॥ सुन्दर नाथीयदासीदान ॥ नथमर्थं गजन्दासीं कथां गुरुमथापि वा। रूमिवायः
 प्रयच्छन् सनाशादु विजायते ॥ पूजादिविधाय अथ पूजाय विधि देव गम मुक्त
 वगमिण्यादि दक्षिणास्यार्चनं ॥ ॥ वामनपूजायदासीदान ॥ दासीदानमर्चनं कालमर्चनं यदसंयुतं ॥ पूनः ४८
 मयीत्यर्थं पुदयं सार्धं कालिकं ॥ पूजादिविधाय अथ पूजाय विधि देव गम मुक्त
 नं ॥ ॥ विष्णुधर्मोत्तरीयकर्मकदासीदान ॥ यमुकर्मकनींदासीं वा दत्तं यप्रयच्छति ॥ ताकाकुसुमतरुकरुण्यवसनीं समु
 दारुणा ॥ पूजादिविधाय अथ पूजाय विधि देव गम मुक्त
 तनूदासीदान ॥ तनूदासीदानं यदसंयुतं ॥ पूनः ४८

यः श्रद्धा न च न वलाधिक न दक वरु यान ४ सहि गरु र्वयू का ली उ न क त ०० मां न नृणां नृप स म्य त्ती दा र्सी पु जा
य ति दे व गा मि त्वा दि द क्षि षा स्य मा र्क ॥ ॥ आ र म य य धा ग क्त सं क र दा सी दा त ॥ ॥ ता दि रा र्थ द द य दा सी तः
या दि जा य र्ग ॥ ॥ हि न न क्तु र्ग सं य क्त व त्तु सो म्या ग रा त्ति न ॥ दा त का र्त्त य र्ग स त्ति स न ४ य र्व वि वा पु न ४ अ र्त्त क्त य
य धा ग क्त वा सा दि त्तु य र्ग लो क्ता ०० र्ग दा सी म या गु र्त्त ग्री व त्तु पु नि या दि ता ॥ न दा क र्त्त क नी म्बे रा ग्या य र्थ र्थ रु
द मु न ॥ द त्त क्त मा य य र्ग य र्ग द द क र्त्त व मु क्तु र्ग न ४ अ ध ग त्ता गु सी मा र्ग वा क्त र्त्त वि स र्त्त य र्ग ॥ न र्व द त्ता म ल ना
उ र्त्त क्त र्त्ता रु र्त्त न न ४ ०० रु ता क य न र्वे व स य र्त्त न न र्व र्त्त ग ॥ हि न न क्तु र्ग सं य क्त वा र्त्त र्त्त न न य र्ग न ग म
न क्तु र्त्त ॥ सो म्या ग रा त्ति न गु र्ग ग रा त्ति न सी मा र्ग रु सी मा र्ग म द नी वि या व र्ग ॥ पू र्त्ता दि वि वा य र्त्त अ य ०० र्ग दा सी मः
या गु र्त्त ग्री व त्तु पु नि या दि ता ॥ स दा क र्त्त क नी रा ग्या य र्थ र्थ रु द म मु न ॥ ०० नि या ० त्ता अ य र्त्त र्त्त सो दि क य र्त्त वः

लोकि कुरु कुरु लुरु वन काम ॐ मां वरु वरु वरु ॥ लंका मां दासीं पुजा यमि देवता मित्रादि दक्षिणा स्य मां नै
 ॥ ॥ तमा गुरु दानि दाना वरु ॥ ॥ वामन पूना धीयदा सदा न ॥ दासी मलंका नमः
 नैय समं यमं ॥ पुनः धारु मस्य पात्यर्थं पुनः दये सावका निकां ॥ पूजा दिवि धाय अश्व पूना धारु मस्य पाति काम ॐ
 दै दासे पुजा यमि देवता मित्रादि दक्षिणा स्य मां नै ॥ ॥ विष्णु धर्मा रुनी यदा तदा न ॥ दासे कर्म कर्न दत्ता ॥
 रगा न सस्य रु लं लुरु ॥ पूजा दिवि धाय अश्व रगा न सवदू न युक्ति काम ॐ सदा संपुजा यमि देवता मित्रादि
 दक्षिणा स्य मां नै ॥ ॥ था धदा सदा न ॥ सदा तिग क सा लो कं यमुया धं पुनः कुति ॥ पूजा दिवि धाय अश्व रगा क
 सा लो कं युक्ति कामा मं था धं दा संपुजा यमि देवता मित्रादि दक्षिणा स्य मां नै ॥ ॥ यदा पूना धीं ती लो ग्रामा निता
 दान ॥ ॥ लग्राम निता वरुं था दद्या दान मूक मी ॥ रु वरुं न न द हं स्या न् स रगे न वन का न न रु वरुं न न रु वरुं

107

रुत युक्ति काम ॐ मां लग्राम नितां विष्णु देवता मित्रादि दक्षिणा स्य मां नै ॥ ॥ विष्णु धर्मा रुनी यदा तदा न ॥ दासे कर्म कर्न दत्ता ॥
 रुदा नै ॥ समुद्रा नां रु रु नां लं खा दी नां पुदा यक ॥ पुनी रु वरुं कामा नां यम मथ न संपुजा यमि देवता मित्रादि दक्षिणा स्य मां नै ॥ का
 पूजा दिवि धाय अश्व वरुं रु वन काम यम ॥ पा नी रु वन काम ॐ मं मं सव व नृ द देवता मित्रादि दक्षिणा स्य मां नै ॥ का
 म्पनां कामा नां आदि यद ग्रा यं पुजा दि दान यद वरुं ॥ ॥ वायु पूना धीयदा सदा न ॥ दासी मलंका नमः
 न ॥ वन्द ना नां पुदा ना न ॥ रं खा नां लो कि क स्य वा पाय क हं न वि वि हं न ना न य कि तथा पु नी न ॥ पूजा दिवि धाय अ
 श्व वरुं वि रु ना न काम पु ना न रं खा न व नृ द देवता न ॐ दै मां कि कं व नृ द देवता मित्रादि दक्षिणा स्य मां नै ॥ ॥ विष्णु
 कत्वा म न दान ॥ गाल वरुं काम न दान ना दृ ॥ खि लं पुा नी ती रग व ॥ पुजा क दान व दान मि ति सा ग न ॥ पूजा दिवि धाय
 य अश्व ॥ ॥ खा र व काम ॐ दै दा न नं विष्णु देवता मित्रादि दक्षिणा स्य मां नै ॥ ॥ गाल वरुं काम न दान ॥ पूजा दिवि धाय

अथ देवता वक्तव्यं दत्तं तत्तु वायुदेवता मित्रादिदक्षिणस्य भर्तुः ॥ वायुपुत्रापीयमायुनयकृत्वा जनदानं
 ॥ नवगृहसुविपुलं ययुर्नृपिर्वचनकृत् ॥ अवीजमानाय भूयिष्यवनावातिनी तत्तु ॥ यकृत् मयुनयकृत्वा
 जनैर्गर्वाय वनावातीत्यन्वयः ॥ गृहं कृत् लक्ष्म्यं यकृत् सविपुलं मरुत्पूजादिविधाय अथ यमका नीववीजमान
 नी तत्तु पवतत्तु वक्तव्यं दत्तं तत्तु वायुदेवता मित्रादिदक्षिणस्य भर्तुः ॥
 यमका नीजाय कनकादानं ॥ नाजाय कनकादानं तत्तु निविधाय निजातं गन्तुं तथा दत्ता नाजाय वक्तव्यं दत्तं ॥
 पूजादिविधाय अथ रुद्राधिक नयक नाजाय वक्तव्यं दत्तं नाजाय कनकादानं विष्णुदेवता मित्रादिदक्षिणस्यः
 भर्तुः ॥ नाजाय कनकादानं कनकादानं ॥ विष्णुधर्मा रुनीयकं कनकादानं ॥ कनकादानं युदानं नयना
 म्नाथं युमूक्ति ॥ पूजादिविधाय अथ यमका वक्तव्यं दत्तं वायुदेवता मित्रादिदक्षिणस्य भर्तुः ॥

१०२

ASHA ARCHIVES 3579

॥ वर्मदानं ॥ ॥ वर्मदानं सनादिर्नृपसमधिगच्छति ॥ वर्मसना रुद्रपूजादिविधाय अथ सार्वदिक नयका प्रकिका
 मरुदं वर्मविष्णुदेवता मित्रादिदक्षिणस्य भर्तुः ॥ आयुर्वदानं ॥ आयुर्वाना पुदानं तत्तु विपुला मवापुया गृह
 जादिविधाय अथ विपुला मवापुया प्रकिका मजुता नायुधनि विष्णुदेवता नीत्यादिदक्षिणस्य भर्तुः ॥ मरुदा ननीय
 तामुदानं ॥ अगमा धातिना मुपुद ॥ पूजादिविधाय अथ रुद्राधिक नयका मरुदं विष्णुदेवता मित्रादिदक्षिणस्य भर्तुः
 नृ ॥ कांस्थिपिरुत्ता नयदानं ॥ लाहान दूटया दानां कृत्वा माप्राह संभयं ॥ अनदूटं पिरुत्तां कृत्वा अथ
 दानादना रुद्रकांस्थिपिरुत्ता कृत्वा धर्मपूजादिविधाय अथ रुद्राधिक नयका मरुदं कांस्थिपिरुत्ता विष्णुदेवता
 मित्रादिदक्षिणस्य भर्तुः ॥ लाहान दानं ॥ अथ सन्धयदानं तत्तु यैस्वयमरुत्तु ॥ पूजादिविधाय अथ सन्धयदानं
 यैस्वयमरुत्तु मरुदं मायसं विष्णुदेवता मित्रादिदक्षिणस्य भर्तुः ॥ नदसी मका नयदानं ॥ पूजादिविधाय अथ

ॐ दक्षिणदिग्मवाच्यं ॥ पूजादिविधाय श्रुतवर्तिवृद्धिकामं दं च दं दं सीसकमविष्णुदेवतमित्यादिदः
 क्षिप्तस्यार्णवः ॥ ॥ दत्तकाष्टदानं ॥ दत्तकाष्टप्रदानेन गुरुवर्जोरुवन्ननःसुगन्धिवदनः ॥ ॥ सीमान्मधसोराः
 मयस्युतः पूजादिविधाय श्रुतवर्तिवृद्धिकामं दं च दं दं सीसकमविष्णुदेवतमित्यादिदः
 क्षिप्तस्यार्णवः ॥ ॥ विष्णुकन्यदानं ॥ ॐ न्यनप्रदानेन दीक्षाभिर्लवमिसंय
 मः ॥ ॥ ३३ यमानामि ॥ पूजादिविधाय श्रुतवर्तिवृद्धिकामं दं च दं दं सीसकमविष्णुदेवतमित्यादिदः
 क्षिप्तस्यार्णवः ॥ ॥ विष्णुधर्मा रुनीयमृत्तिकादानं ॥ मृत्तिकावप्रदानेन गुरुविः सर्वप्रज्ञायन
 ॥ पूजादिविधाय श्रुतवर्तिवृद्धिकामं दं च दं दं सीसकमविष्णुदेवतमित्यादिदः क्षिप्तस्यार्णवः ॥ ॥ श्रुतवर्तिवृद्धिकामं दं च दं दं सीसकमविष्णुदेवतमित्यादिदः
 क्षिप्तस्यार्णवः ॥ ॥ गुरुनद्विष्णुनारदं गुरुविष्णुप्रदानेन सर्वदाता रुमं सूर्य ॥ सर्वदा सर्ववर्धनात्तनकं पुनमूर्ध्म ॥ ॥ नूननविधि

103

॥ सप्तमसाकमाध्यामिकी कृतकालकृतं ॥ पूजादिविधाय श्रुतवर्तिवृद्धिकामं दं च दं दं सीसकमविष्णुदेवतमित्यादिदः
 क्षिप्तस्यार्णवः ॥ ॥ दत्तकाष्टदानं ॥ दत्तकाष्टप्रदानेन गुरुवर्जोरुवन्ननःसुगन्धिवदनः ॥ ॥ सीमान्मधसोराः
 मयस्युतः पूजादिविधाय श्रुतवर्तिवृद्धिकामं दं च दं दं सीसकमविष्णुदेवतमित्यादिदः
 क्षिप्तस्यार्णवः ॥ ॥ विष्णुकन्यदानं ॥ ॐ न्यनप्रदानेन दीक्षाभिर्लवमिसंय
 मः ॥ ॥ ३३ यमानामि ॥ पूजादिविधाय श्रुतवर्तिवृद्धिकामं दं च दं दं सीसकमविष्णुदेवतमित्यादिदः
 क्षिप्तस्यार्णवः ॥ ॥ विष्णुधर्मा रुनीयमृत्तिकादानं ॥ मृत्तिकावप्रदानेन गुरुविः सर्वप्रज्ञायन
 ॥ पूजादिविधाय श्रुतवर्तिवृद्धिकामं दं च दं दं सीसकमविष्णुदेवतमित्यादिदः क्षिप्तस्यार्णवः ॥ ॥ श्रुतवर्तिवृद्धिकामं दं च दं दं सीसकमविष्णुदेवतमित्यादिदः
 क्षिप्तस्यार्णवः ॥ ॥ गुरुनद्विष्णुनारदं गुरुविष्णुप्रदानेन सर्वदाता रुमं सूर्य ॥ सर्वदा सर्ववर्धनात्तनकं पुनमूर्ध्म ॥ ॥ नूननविधि

शमरुलावाफिकामः दं हृगलामर्तं वरुस्यनिदेवतमिह्यादिदक्षिणादग्गुहगयनिधानार्कः ॥ वृकत्वक
समूहववमुदान ॥ दत्तावचनर्तवासावसूनालाकमाधूयातावन्धनवृकत्वकयूजादिविधाय अश्ववसूलाकयाफि
कामः दं वन्धनर्तं वरुस्यनिदेवतमिह्यादिदक्षिणादग्गुहगयनिधानार्कः ॥ कृकनकवमुदान ॥ कोसूस्मनकव
मुदान ॥ यूजादिविधाय अश्वसोलाग्ययाफिकामः दं कृस्मनकवमुदान वरुस्यनिदेवतमिह्यादिदक्षिणादग्गुहगय
निधानार्कः ॥ कृकसमनकवमुदान ॥ दानार्क कृकसमनकस्य लावधमसुदधूयाता ॥ यूजादिविधाय अश्वलावधम
याफिकामः दं कृकसमवमुदान वरुस्यनिदेवतमिह्यादिदक्षिणादग्गुहगयनिधानार्कः ॥ रुनिद्रादिनकवमुदान ॥ नरुनेनचोव
नीलेष्टुनकन्दलासूरीरुवत ॥ अचो ४ कृस्मनकृकसमन ४ ॥ अनीसे ३ तितीदवाच्यनरुने ४ ॥ यूजादिविधाय अश्वसूखि
वरुवनकामः दं नकवमुदान वरुस्यनिदेवतमिह्यादिदक्षिणादग्गुहगयनिधानार्कः ॥ वृकपूनादवद्वमुदान

दान ॥ यूजादिविधाय अश्वसोवर्कनारुगवद्वृगुह्यालंकृणामकर्हकवद्वनाडिवद्वनधवद्वर्कजनकनवाधर्मना
रुपूनगमनकामपुनानिवमुनिवृहस्यनिपूनाधिवानराकवासकामः दं वरुस्यनिदेवतमिह्यादिदक्षिणादग्गुहगय
निधानार्कः ॥ पुमागं वृगुदानलिखितमव ॥ ॥ विद्वधर्मश्राविकवमुदान ॥ श्राविकवसुनदत्तारुगुह्या
लाकमाधूयाता ॥ श्राविकमयसामाहुव ॥ यूजादिविधाय अश्ववद्वरुगुह्यालाकावाफिकामः दं दमाविकवमुदान वरुस्यनिदे
वतमिह्यादिदक्षिणादग्गुहगयनिधानार्कः ॥ ॥ श्रात्ययपूनापीयकमलदान ॥ नवसूक्ष्मसूविद्वर्तयषयवृनि
कवर्त ॥ गीतादिगद्विजन्तुयतवामार्ज ॥ सुखयद ४ यूजादिविधाय अश्वसूखयदमार्गयाफिकामः दं नवसूक्ष्म
सूविद्वर्तकवर्त वरुस्यनिदेवतमिह्यादिदक्षिणादग्गुहगयनिधानार्कः ॥ ॥ विगानकदान ॥ विगानकयदाननसर्वः
याधे ४ यमृग ॥ यूजादिविधाय अश्वसर्वयाधयमृकिकामः दं विद्वधर्मवतमिह्यादिदक्षिणादग्गुहगयनिधानार्कः ॥ ॥ नन्दिपूनाः

[illegible][illegible]

नयोरुत्तमं ॥ ॥ मकाराननं प्रप्राथितवमुदात्तं ॥ दाता नोऽप्राथिता नाशु पुनरुदाऽसुर्गमामिनः ॥ यज्ञादिविधायः
अथ सग्रे प्रापि कामं दं अमुकद्वयं विदुर्देवतमिह्यादिविद्विषास्यमर्कः ॥ ॥ अतः प्रियवमुदात्तं ॥ यारू
वल्काऽयानंदं दं प्रियं गयां दत्वा तर्कं सुखीरुवन् ॥ प्रियमात्मनः ॥ यज्ञादिविधायः अथात्तं सुखितरुवन्तको
महोदमात्मप्रियं वमुविदुर्देवतमिह्यादिविद्विषास्यमर्कः ॥ ॥ विदुर्कारिमतवमुदात्तं ॥ यथादिष्टं तर्कं साक-
यज्ञाद्यादयिर्गुरुः ॥ गुरुदुदात्तदयं गदवाक्यमिदुगा ॥ यज्ञादिविधायः अथात्तं सुखितरुवन्तको ननु नरु नया
फिकामं दं ममुकद्वयं विदुर्देवतममुकं गगयह्यादिविद्विषास्यमर्कः ॥ ॥ यारूवल्काऽयस्ययस्यरुवदः
थां गस्यतस्ययदानतः ॥ एषा काममक्षरं गगयदानरुत्तं तरुत् ॥ यज्ञादिविधायः अथात्तं सुखितरुवन्तको ननु नरु नया
महोदममुकद्वयं विदुर्देवतमिह्यादिविद्विषास्यमर्कः ॥ ॥ अथममुदात्तं ॥ गगधर्मो रुत्तं ॥ ननु नानां पुदानं न-

१०२

मिनिनस्यात्तमरुत्तं ॥ खानार्थं लयमादीर्तां वसन्तं द्विजसुरुमाऽप्रादिवदत्तमात्रस्य गुरुधीं यानकानां तथग्रीष्म-
कटूनां नदनकनां ॥ गगधर्मस्य धर्मस्य वमुधा मयिर्देमन ॥ तदन्तं नवयोसु ॥ गगधर्मिनिनसता विनृतदानं ॥ यज्ञा
दिविधायः अथात्तं मिनिनसतो मरुत्तं नवाफिकामं पुगानी ननु नानिविदुर्देवतानीह्यादिविद्विषास्यमर्कः ॥ ॥ पूर्ववत्
कस्तानां नलं वनमात्रा नानुदानं यि ग्रीष्मा यानकानां दानं यिवयोसु कटूद्वयाद्या न विधनदि अन्नदानं
विदुर्मर्कं वमुधा नानिविदुर्देवतं ननु दसुत्तं खनवाक्यमरुत्तं नीयं ॥ ॥ अथमासनियतदानं ॥ गगधर्मो रुत्तं ननु नरु नया
यमासीत्यतिसदानं ॥ माद्यमासितितानुयमुवाक्यं र्धत्तं ॥ सर्वसत्त्वसमाकीर्णं ननु नकादर्थन काम पुगासिलानुमा
ननु कसिं चिदरिममदिन यज्ञादिविधायः अथात्तं सुखितरुवन्तको ननु नरु नया
मदेवगानिह्यादिविद्विषास्यमर्कः ॥ ॥ वामनपुनानीयतितानुयदानं ॥ माद्यमासितितानुयदानं ॥ माद्यमासितितानुयदानं ॥

दानव । ॐ २५ न्य नाद यश्च न्य माधव प्री ध ना य दु ॥ श्रुति पद न गे ल य टी क म न दि शी ना य रु न का नां ग रु ष मि
 ति न ता क न ॥ य ऊा दि वि क्ष य ॥ अ य मा य मा स मा ध व प्री ति का म न गी कि लान् सा म दे व ता ला न गानी धा नि वा न ग
 वी न्य ना नि वि षू दे व ता नि वा ॐ दै ली वि षू दे व ती वा ॐ मां य टी व रु स्य मि दे व ती वा ॐ मां क म्ब ली वि षू दे व ती वा न
 मू क ल ग गाय त्वा दि द क्रि षा मू षि गुरु ष स्य र्ग न ॥ गुरु षा र्क ॥ ॥ रु न्नु न वाम न पु न्ना धी य यी त्या दि दाने ॥ रु न्नु न
 वी रु या गा या व मुं रु षा डि न क था ॥ र ग वि न्द प्री ध ना र्थ य दान वीं पु न्नु ष र्क ॥ य ऊा दि वि क्ष य ॥ अ य रु न्नु न मा ॥ १०
 स र ग वि न्द प्री ति का म न गी न वी दि न वि षू दे व ता न्नु न गी न नू ड दे व ता वा ॐ दै व मुं व रु स्य मि दे व ती वा ग त्या दि द
 क्रि षा मू षि गुरु ष र ग गुरु ष स्य र्ग न ॥ ॥ रु न्नु न्ना य य पु न्ना धी य प्री य रु रु न्नु न्ना द न्वा प्रि या रु व मि रू त ली ॥ पु
 ण्ना दि वि क्ष य ॥ अ य रु न्नु न मा स रु न ता धि क न व क प्रि य ल रु व न का म ॐ दै प्रि यं गु वि षू दे व ता मि त्या दि द क्रि षा मू